SampleTesting

15 Jan 2019 02:09 AM

Asansol

Model: Web-C1,P2

Order No: 107528301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**14-15/01/2019**
दिन	सोम-मंगलवार
जन्म समय	**02:09:54 घंटे**
इष्ट	49:19:17 घटी
स्थान	**Asansol**
देश	India

अक्षांश	23:37:44 पूर्व
रेखांश	87:05:32 उत्तर
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:18:22 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	02:28:16 घंटे
वेलान्तर	-00:08:52 घंटे
साम्पातिक काल	10:04:21 घंटे
सूर्योदय	06:26:11 घंटे
सूर्यास्त	17:15:10 घंटे
दिनमान	10:48:59 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	00:16:04 मकर
लग्न के अंश	00:40:33 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	वृश्चिक - मंगल
राशि-स्वामी	**मेष - मंगल**
नक्षत्र-चरण	**अश्विनी - 3**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	सिद्ध
करण	बालव
गण	देव
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	सिंह
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	चो-चोलुक्य
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1940	पौष	25
पंजाबी	संवत : 2075	माघ	2
बंगाली	सन् : 1425	माघ	1
तमिल	संवत : 2075	थई	1
केरल	कोल्लम : 1194	मकरम	1
नेपाली	संवत : 2075	माघ	2
चैत्रादि	संवत : 2075	पौष	शुक्ल 9
कार्तिकादि	संवत : 2075	पौष	शुक्ल 9

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 8
तिथि समाप्ति काल _____: 24:37:23
जन्म तिथि _____: 9
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: रेवती
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 12:52:21 घंटे
जन्म योग _____: अश्विनी
सूर्योदय कालीन योग ____: शिव
योग समाप्ति काल _____: 07:29:55 घंटे
जन्म योग _____: सिद्ध
सूर्योदय कालीन करण ____: विष्टि
करण समाप्ति काल _____: 12:15:26 घंटे
जन्म करण _____: बालव
भयात _____: 33:13:54
भभोग _____: 62:38:18
भोग्य दशा काल _____: केतु 3 वर्ष 3 मा 23 दि

घात चक्र

मास _____: कार्तिक
तिथि _____: 1-6-11
दिन _____: रविवार
नक्षत्र _____: मघा
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मृग
लग्न _____: मेष
सूर्य _____: कर्क
चन्द्र _____: मेष
मंगल _____: सिंह
बुध _____: वृष
गुरु _____: कन्या
शुक्र _____: तुला
शनि _____: मिथुन
राहु _____: वृश्चिक

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

चन्द्र कुंडली

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

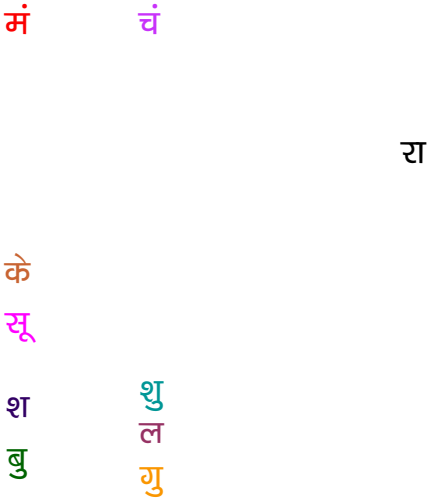

लग्न कुंडली

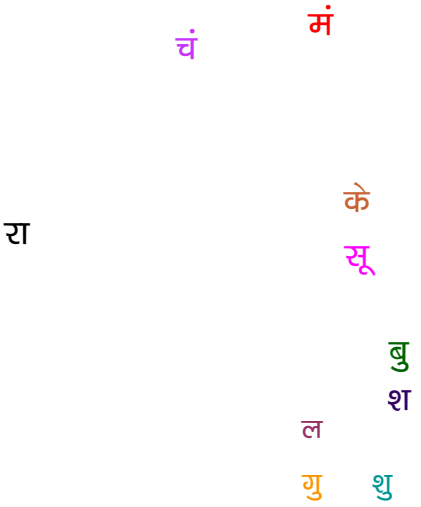

विंशोत्तरी
केतु 3वर्ष 3मा 23दि

केतु

15/01/2019

10/05/2135

केतु	09/05/2022
शुक्र	09/05/2042
सूर्य	08/05/2048
चन्द्र	09/05/2058
मंगल	08/05/2065
राहु	09/05/2083
गुरु	09/05/2099
शनि	10/05/2118
बुध	10/05/2135

योगिनी
भ्रामरी 1वर्ष 10मा 21दि

भ्रामरी

15/01/2019

06/12/2020

	00/00/0000
	00/00/0000
	15/01/2019
सिद्धा	18/05/2019
संकटा	07/04/2020
मंगला	17/05/2020
पिंगला	06/08/2020
धान्या	06/12/2020

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	00:40:33	315:01:37	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	मंगल	---
सूर्य			मक	00:16:04	01:01:07	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	शत्रु राशि
चंद्र			मेष	07:01:22	12:46:51	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	राहु	सम राशि
मंगल			मीन	15:10:05	00:40:36	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	गुरु	मित्र राशि
बुध		अ	धनु	20:46:12	01:34:13	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	सम राशि
गुरु			वृश्चि	20:28:26	00:11:47	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	मित्र राशि
शुक्र			वृश्चि	13:37:53	01:04:06	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	सम राशि
शनि		अ	धनु	18:53:25	00:07:00	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	सम राशि
राहु	व		कर्क	02:39:36	00:00:02	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	राहु	शत्रु राशि
केतु	व		मक	02:39:36	00:00:02	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष			मेष	04:30:32	00:00:25	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	चंद्र	---
नेप			कुंभ	20:17:30	00:01:37	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	---
प्लूटो			धनु	26:56:30	00:02:02	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	सूर्य	---
दशम भाव			सिंह	04:49:58	--	मघा	--	10	सूर्य	केतु	मंगल	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:07:08

लग्न-चलित

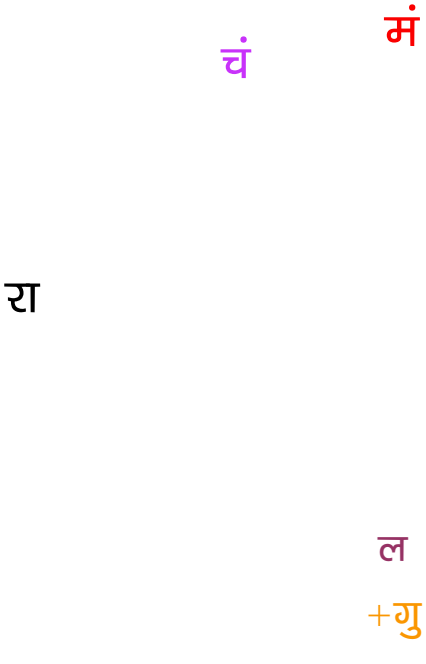

चन्द्र कुंडली

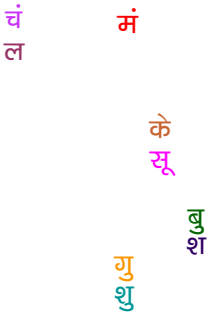

नवमांश कुंडली

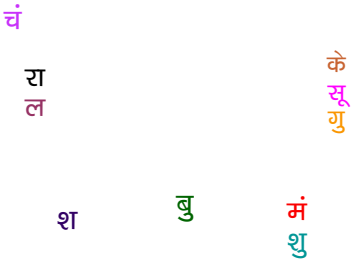

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	तुला	16:22:07	वृश्चिक	00:40:33
2	वृश्चिक	16:22:07	धनु	02:03:42
3	धनु	17:45:16	मकर	03:26:50
4	मकर	19:08:24	कुम्भ	04:49:58
5	कुम्भ	19:08:24	मीन	03:26:50
6	मीन	17:45:16	मेष	02:03:42
7	मेष	16:22:07	वृष	00:40:33
8	वृष	16:22:07	मिथुन	02:03:42
9	मिथुन	17:45:16	कर्क	03:26:50
10	कर्क	19:08:24	सिंह	04:49:58
11	सिंह	19:08:24	कन्या	03:26:50
12	कन्या	17:45:16	तुला	02:03:42

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	00:40:33
2	धनु	00:13:34
3	मकर	01:45:42
4	कुम्भ	04:49:58
5	मीन	06:59:43
6	मेष	05:40:27
7	वृष	00:40:33
8	मिथुन	00:13:34
9	कर्क	01:45:42
10	सिंह	04:49:58
11	कन्या	06:59:43
12	तुला	05:40:27

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती

चलित कुंडली

भाव कुंडली

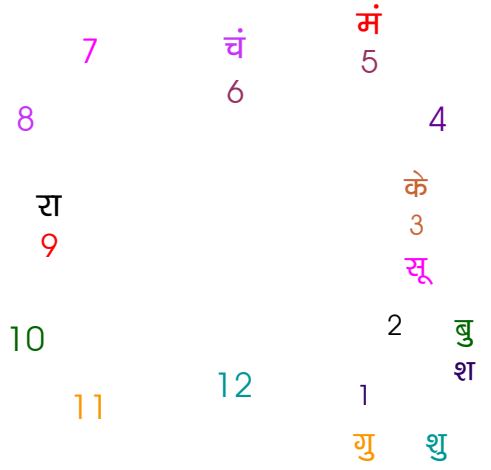

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	कलत्र	पितृ	मृत	खल	सभा	4.46	12 %
चंद्र	ज्ञाति	मातृ	कुमार	शक्त	प्रकाश	9.24	53 %
मंगल	मातृ	भ्रातृ	युवा	मुदित	प्रकाश	3.69	33 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	वृद्ध	विकल	आगमन	0.00	67 %
गुरु	अमात्य	धन	कुमार	मुदित	प्रकाश	1.73	56 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	युवा	निपीदित	प्रकाश	1.04	23 %
शनि	भ्रातृ	आयु	वृद्ध	विकल	नृत्यलिप्सा	4.04	56 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	खल	आगमन	0.00	5 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	खल	सभा	0.00	5 %
कुल						24.20	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती

चलित कुंडली

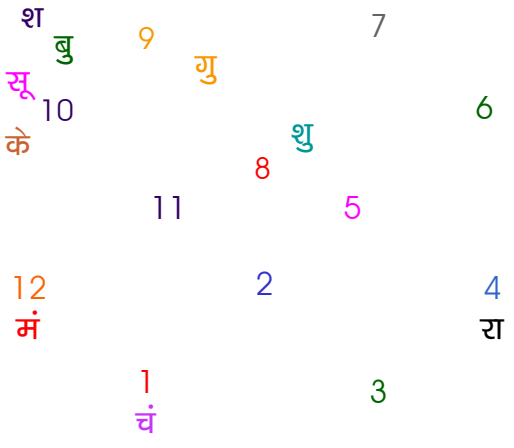

लग्न-चलित

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : केतु 3 वर्ष 3 मास 23 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मक	00:16:04	शनि	सूर्य	राहु	बुध
चंद्र		मेष	07:01:22	मंगल	केतु	राहु	शुक्र
मंगल		मीन	15:10:05	गुरु	शनि	गुरु	शनि
बुध		धनु	20:46:12	गुरु	शुक्र	गुरु	बुध
गुरु		वृश्चि	20:28:26	मंगल	बुध	शुक्र	गुरु
शुक्र		वृश्चि	13:37:53	मंगल	शनि	राहु	शनि
शनि		धनु	18:53:25	गुरु	शुक्र	राहु	शनि
राहु	व	कर्क	02:39:36	चंद्र	गुरु	राहु	शुक्र
केतु	व	मक	02:39:36	शनि	सूर्य	गुरु	मंगल
हर्ष		मेष	04:30:32	मंगल	केतु	चंद्र	केतु
नेप		कुंभ	20:17:30	शनि	गुरु	गुरु	शनि
प्लूटो		धनु	26:56:30	गुरु	सूर्य	सूर्य	गुरु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृश्चि	00:40:33	मंगल	गुरु	मंगल	राहु
2	धनु	00:13:20	गुरु	केतु	केतु	चंद्र
3	मक	01:44:57	शनि	सूर्य	गुरु	बुध
4	कुंभ	04:48:46	शनि	मंगल	शुक्र	केतु
5	मीन	06:58:39	गुरु	शनि	बुध	गुरु
6	मेष	05:39:59	मंगल	केतु	राहु	राहु
7	वृष	00:40:33	शुक्र	सूर्य	राहु	शुक्र
8	मिथु	00:13:20	बुध	मंगल	बुध	बुध
9	कर्क	01:44:57	चंद्र	गुरु	राहु	गुरु
10	सिंह	04:48:46	सूर्य	केतु	मंगल	मंगल
11	कन्या	06:58:39	बुध	सूर्य	बुध	शनि
12	तुला	05:39:59	शुक्र	मंगल	चंद्र	मंगल

के.पी. अयनांश : 24:01:02

फॉरच्युना : कुम्भ 07:25:51

लग्न कुंडली

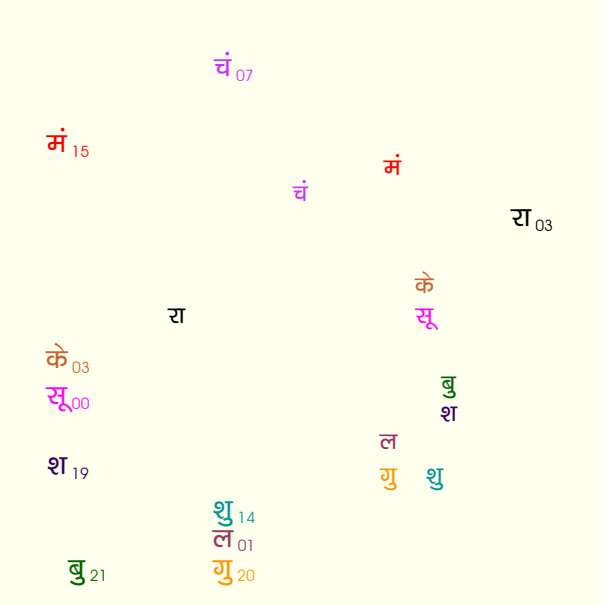

भाव कुंडली

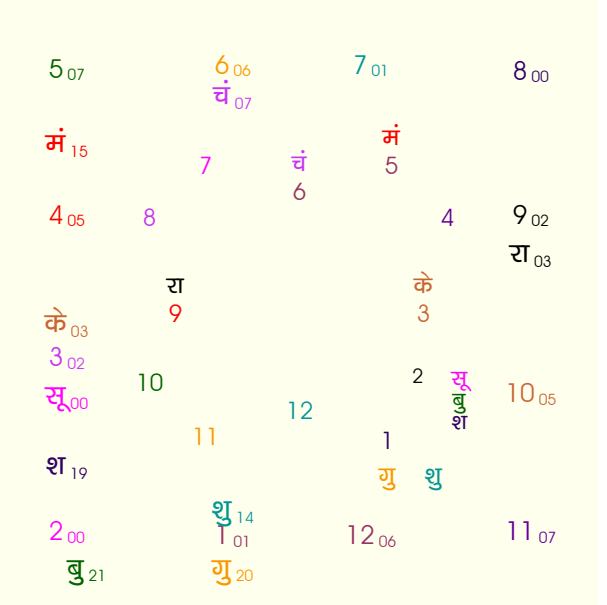

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल- बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु,
2	सूर्य+ मंगल, बुध, गुरु+ शुक्र, शनि, राहु- केतु,
3	चंद्र, मंगल- शुक्र- शनि- केतु,
4	मंगल- शुक्र- शनि-
5	मंगल, गुरु- राहु-
6	चंद्र, मंगल-
7	बुध- शुक्र- शनि-
8	बुध- गुरु-
9	चंद्र- राहु,
10	सूर्य, केतु-
11	बुध- गुरु-
12	बुध- शुक्र- शनि-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2+ 10,
चंद्र	3, 6, 9-
मंगल	1- 2, 3- 4- 5, 6-
बुध	1, 2, 7- 8- 11- 12-
गुरु	1, 2+ 5- 8- 11-
शुक्र	1, 2, 3- 4- 7- 12-
शनि	1, 2, 3- 4- 7- 12-
राहु	1, 2- 5- 9,
केतु	2, 3, 10-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	गुरु
लग्न राशि स्वामी	मंगल
राशि नक्षत्र स्वामी	केतु
राशि स्वामी	मंगल
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	मंगल
राशि अन्तर स्वामी	राहु

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	वृश्चि	मक	मेष	मीन	धनु	वृश्चि	वृश्चि	धनु	कर्क	मक
होरा	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	वृश्चि	मक	मेष	कर्क	सिंह	कर्क	मीन	मेष	कर्क	मक
चतुर्थांश	वृश्चि	मक	मेष	कन्या	मिथु	वृष	कुंभ	मिथु	कर्क	मक
सप्तमांश	वृष	कर्क	वृष	धनु	मेष	कन्या	सिंह	मेष	मक	कर्क
नवमांश	कर्क	मक	मिथु	वृश्चि	तुला	मक	वृश्चि	कन्या	कर्क	मक
दशमांश	कर्क	कन्या	मिथु	मेष	मिथु	मक	वृश्चि	मिथु	मीन	कन्या
द्वादशांश	वृश्चि	मक	मिथु	कन्या	सिंह	कर्क	मेष	कर्क	सिंह	कुंभ
षोडशांश	सिंह	मेष	कर्क	सिंह	वृश्चि	मिथु	मीन	तुला	वृष	वृष
विंशांश	धनु	मेष	सिंह	मिथु	कन्या	मक	कन्या	सिंह	वृष	वृष
चतुर्विंशांश	कर्क	कर्क	मक	कर्क	धनु	वृश्चि	वृष	वृश्चि	कन्या	कन्या
सप्तविंशांश	मक	कर्क	तुला	कुंभ	तुला	कर्क	मक	कन्या	मीन	कन्या
त्रिंशांश	वृष	वृष	कुंभ	मीन	मिथु	मक	मीन	मिथु	वृष	वृष
खवेदांश	तुला	तुला	मक	मिथु	कर्क	मक	मेष	वृष	मक	मक
अक्षवेदांश	कन्या	मेष	कुंभ	तुला	कर्क	कुंभ	मेष	मेष	कर्क	कर्क
षष्ट्यंश	धनु	मक	मिथु	कन्या	वृष	मीन	कुंभ	मक	धनु	मिथु

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम
चन्द्र	0 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक
मंगल	1 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक
बुध	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
गुरु	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
शुक्र	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
शनि	0 ---	0 ---	2 पारिजात	2 भेदक
राहु	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---
केतु	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	10.80	13.15	14.90	15.90	12.30	6.80	10.50	9.50	10.40
सप्तवर्ग	11.80	12.28	14.25	15.68	12.18	7.18	10.25	9.50	10.40
दशवर्ग	12.18	12.03	13.30	16.43	14.23	9.83	13.10	8.65	12.83
षोडशवर्ग	12.33	12.33	13.60	15.98	13.78	10.33	13.50	9.05	12.78

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	27	51	44	28	15	16	40
सप्तवर्गज बल	83	75	105	129	83	28	49
ओजयुग्मक बल	0	0	0	30	0	30	15
केन्द्र बल	15	15	30	30	60	60	30
द्रेष्काण बल	15	0	0	0	0	0	15
कुल स्थान बल	139	141	179	217	157	134	149
कुल दिग्बल	12	39	13	43	53	33	16
नतोन्नत बल	12	48	48	60	12	12	48
पक्ष बल	28	65	28	28	32	32	28
त्रिभाग बल	0	0	60	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	15	0	0
मास बल	0	0	30	0	0	0	0
वार बल	0	45	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	60	0
अयन बल	5	14	35	59	1	2	59
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	45	172	201	147	120	106	135
कुल चेष्टाबल	0	0	30	2	13	35	4
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	6	-16	-24	4	3	-1	3
कुल षट्बल	262	388	418	439	381	350	317
रूप षट्बल	4.4	6.5	7.0	7.3	6.4	5.8	5.3
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	0.9	1.1	1.4	1.0	1.0	1.1	1.1
संबंधित पद	7	2	1	5	6	3	4

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	14.75	40.69	36.64	8.34	14.07	23.48	13.09
कष्ट फल	41.53	15.50	21.60	42.85	45.90	33.03	33.08

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	418	381	317	317	381	418	350	439	388	262	439	350
भावदिग्बल	0	50	10	30	50	20	30	10	10	60	40	50
भावदृष्टि बल	-1	3	12	43	52	70	35	77	71	81	12	-8
कुल भाव बल	417	434	338	390	483	508	415	526	469	402	492	392
रूप भाव बल	6.9	7.2	5.6	6.5	8.0	8.5	6.9	8.8	7.8	6.7	8.2	6.5
संबंधित पद	7	6	12	11	4	2	8	1	5	9	3	10

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	5	3	1	3	4	5	5	3	1	3	5	1	39
गुरु	6	5	2	3	6	6	4	4	6	4	5	5	56
मंगल	5	2	5	1	3	6	6	2	2	2	2	3	39
सूर्य	6	2	3	3	4	7	6	3	2	5	4	3	48
शुक्र	3	3	4	6	7	4	2	5	4	3	6	5	52
बुध	4	3	6	3	3	8	4	6	6	4	4	3	54
चंद्र	5	4	4	4	5	5	5	3	2	4	5	3	49
लग्न	3	4	3	3	3	6	3	3	6	5	4	6	49
बिन्दु	37	26	28	26	35	47	35	29	29	30	35	29	386
रेखा	27	38	36	38	29	17	29	35	35	34	29	35	382

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	0	0	2	3	2	4	2	0	0	4	0	21
गुरु	0	1	0	0	0	2	2	1	0	0	3	2	11
मंगल	3	0	3	0	1	4	4	1	0	0	0	2	18
सूर्य	4	0	0	0	2	5	3	0	0	3	1	0	18
शुक्र	0	0	2	1	4	1	0	0	1	0	4	0	13
बुध	1	0	2	0	0	5	0	3	3	1	0	0	15
चंद्र	3	0	0	1	3	1	1	0	0	0	1	0	10
लग्न	0	0	0	0	0	2	0	0	3	1	1	3	10
रेखा	15	1	7	4	13	22	14	7	7	5	14	7	116

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	0	0	2	3	2	4	2	0	0	4	0	21
गुरु	0	1	0	0	0	2	1	1	0	0	3	2	10
मंगल	3	0	3	0	1	3	4	1	0	0	0	2	17
सूर्य	4	0	0	0	2	5	3	0	0	3	0	0	17
शुक्र	0	0	1	1	4	1	0	0	1	0	4	0	12
बुध	1	0	2	0	0	2	0	3	3	1	0	0	12
चंद्र	3	0	0	1	3	1	1	0	0	0	1	0	10
लग्न	0	0	0	0	0	2	0	0	3	1	0	3	9
रेखा	15	1	6	4	13	18	13	7	7	5	12	7	108

शोध्य पिंड

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	78	109	78	130	89	92	110	164
ग्रह पिंड	59	35	15	48	91	33	10	54
शोध्य पिंड	137	144	93	178	180	125	120	218

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 3 वर्ष 3 मास 23 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
15/01/2019		09/05/2022		09/05/2042		08/05/2048		09/05/2058	
09/05/2022		09/05/2042		08/05/2048		09/05/2058		08/05/2065	
	00/00/0000	शुक्र	07/09/2025	सूर्य	26/08/2042	चंद्र	09/03/2049	मंगल	05/10/2058
	00/00/0000	सूर्य	07/09/2026	चंद्र	25/02/2043	मंगल	08/10/2049	राहु	23/10/2059
	00/00/0000	चंद्र	08/05/2028	मंगल	03/07/2043	राहु	08/04/2051	गुरु	28/09/2060
	00/00/0000	मंगल	08/07/2029	राहु	26/05/2044	गुरु	07/08/2052	शनि	07/11/2061
	15/01/2019	राहु	08/07/2032	गुरु	15/03/2045	शनि	09/03/2054	बुध	04/11/2062
राहु	27/04/2019	गुरु	09/03/2035	शनि	25/02/2046	बुध	08/08/2055	केतु	02/04/2063
गुरु	02/04/2020	शनि	09/05/2038	बुध	01/01/2047	केतु	08/03/2056	शुक्र	02/06/2064
शनि	11/05/2021	बुध	09/03/2041	केतु	09/05/2047	शुक्र	07/11/2057	सूर्य	07/10/2064
बुध	09/05/2022	केतु	09/05/2042	शुक्र	08/05/2048	सूर्य	09/05/2058	चंद्र	08/05/2065

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
08/05/2065		09/05/2083		09/05/2099		10/05/2118		10/05/2135	
09/05/2083		09/05/2099		10/05/2118		10/05/2135		00/00/0000	
राहु	20/01/2068	गुरु	26/06/2085	शनि	13/05/2102	बुध	05/10/2120	केतु	06/10/2135
गुरु	14/06/2070	शनि	07/01/2088	बुध	20/01/2105	केतु	03/10/2121	शुक्र	05/12/2136
शनि	20/04/2073	बुध	14/04/2090	केतु	01/03/2106	शुक्र	02/08/2124	सूर्य	12/04/2137
बुध	08/11/2075	केतु	21/03/2091	शुक्र	30/04/2109	सूर्य	09/06/2125	चंद्र	11/11/2137
केतु	25/11/2076	शुक्र	19/11/2093	सूर्य	12/04/2110	चंद्र	08/11/2126	मंगल	09/04/2138
शुक्र	26/11/2079	सूर्य	07/09/2094	चंद्र	12/11/2111	मंगल	06/11/2127	राहु	16/01/2139
सूर्य	20/10/2080	चंद्र	07/01/2096	मंगल	20/12/2112	राहु	25/05/2130		00/00/0000
चंद्र	20/04/2082	मंगल	13/12/2096	राहु	27/10/2115	गुरु	30/08/2132		00/00/0000
मंगल	09/05/2083	राहु	09/05/2099	गुरु	10/05/2118	शनि	10/05/2135		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 3 वर्ष 3 मा 13 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
15/01/2019		27/04/2019		02/04/2020		11/05/2021		09/05/2022	
27/04/2019		02/04/2020		11/05/2021		09/05/2022		07/09/2025	
	00/00/0000	गुरु	11/06/2019	शनि	05/06/2020	बुध	02/07/2021	शुक्र	28/11/2022
	00/00/0000	शनि	04/08/2019	बुध	01/08/2020	केतु	23/07/2021	सूर्य	27/01/2023
	00/00/0000	बुध	21/09/2019	केतु	25/08/2020	शुक्र	21/09/2021	चंद्र	09/05/2023
	00/00/0000	केतु	11/10/2019	शुक्र	31/10/2020	सूर्य	09/10/2021	मंगल	19/07/2023
	15/01/2019	शुक्र	07/12/2019	सूर्य	20/11/2020	चंद्र	09/11/2021	राहु	18/01/2024
शुक्र	12/02/2019	सूर्य	24/12/2019	चंद्र	24/12/2020	मंगल	30/11/2021	गुरु	28/06/2024
सूर्य	03/03/2019	चंद्र	22/01/2020	मंगल	17/01/2021	राहु	23/01/2022	शनि	07/01/2025
चंद्र	04/04/2019	मंगल	11/02/2020	राहु	18/03/2021	गुरु	12/03/2022	बुध	28/06/2025
मंगल	27/04/2019	राहु	02/04/2020	गुरु	11/05/2021	शनि	09/05/2022	केतु	07/09/2025

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
07/09/2025		07/09/2026		08/05/2028		08/07/2029		08/07/2032	
07/09/2026		08/05/2028		08/07/2029		08/07/2032		09/03/2035	
सूर्य	25/09/2025	चंद्र	28/10/2026	मंगल	02/06/2028	राहु	20/12/2029	गुरु	15/11/2032
चंद्र	26/10/2025	मंगल	03/12/2026	राहु	05/08/2028	गुरु	15/05/2030	शनि	18/04/2033
मंगल	16/11/2025	राहु	04/03/2027	गुरु	01/10/2028	शनि	04/11/2030	बुध	03/09/2033
राहु	10/01/2026	गुरु	24/05/2027	शनि	07/12/2028	बुध	08/04/2031	केतु	30/10/2033
गुरु	28/02/2026	शनि	29/08/2027	बुध	06/02/2029	केतु	11/06/2031	शुक्र	10/04/2034
शनि	27/04/2026	बुध	23/11/2027	केतु	02/03/2029	शुक्र	11/12/2031	सूर्य	29/05/2034
बुध	17/06/2026	केतु	28/12/2027	शुक्र	12/05/2029	सूर्य	04/02/2032	चंद्र	18/08/2034
केतु	09/07/2026	शुक्र	08/04/2028	सूर्य	03/06/2029	चंद्र	05/05/2032	मंगल	14/10/2034
शुक्र	07/09/2026	सूर्य	08/05/2028	चंद्र	08/07/2029	मंगल	08/07/2032	राहु	09/03/2035

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
09/03/2035		09/05/2038		09/03/2041		09/05/2042		26/08/2042	
09/05/2038		09/03/2041		09/05/2042		26/08/2042		25/02/2043	
शनि	08/09/2035	बुध	02/10/2038	केतु	02/04/2041	सूर्य	14/05/2042	चंद्र	10/09/2042
बुध	19/02/2036	केतु	02/12/2038	शुक्र	12/06/2041	चंद्र	23/05/2042	मंगल	21/09/2042
केतु	27/04/2036	शुक्र	23/05/2039	सूर्य	04/07/2041	मंगल	30/05/2042	राहु	19/10/2042
शुक्र	05/11/2036	सूर्य	14/07/2039	चंद्र	08/08/2041	राहु	15/06/2042	गुरु	12/11/2042
सूर्य	02/01/2037	चंद्र	08/10/2039	मंगल	02/09/2041	गुरु	30/06/2042	शनि	11/12/2042
चंद्र	09/04/2037	मंगल	07/12/2039	राहु	05/11/2041	शनि	17/07/2042	बुध	06/01/2043
मंगल	15/06/2037	राहु	11/05/2040	गुरु	01/01/2042	बुध	02/08/2042	केतु	16/01/2043
राहु	05/12/2037	गुरु	26/09/2040	शनि	09/03/2042	केतु	08/08/2042	शुक्र	16/02/2043
गुरु	09/05/2038	शनि	09/03/2041	बुध	09/05/2042	शुक्र	26/08/2042	सूर्य	25/02/2043

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	1
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 1
शत्रु अंक	7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

जीवन रत्नः	मूंगा		सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	मोती		शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
कारक रत्नः	माणिक्य		पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
शुभ उपरत्नः	पुखराज		स्वास्थ्य, धन, सन्तति सुख

दशा	रत्न	क्षमता	मंत्र-जप / व्रत / दान / लाभ
केतु	पुखराज	97%	ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः (17000)
15/01/2019	मूंगा	92%	मंगलवार,तिल, सप्तधान्य, नारियल, शस्त्र, तेल
09/05/2022	लहसुनिया	64%	पराक्रम, धन, सन्तति सुख
शुक्र	पुखराज	97%	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (16000)
09/05/2022	मूंगा	86%	शुक्रवार,चावल, मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन, दूध
09/05/2042	नीलम	70%	स्वास्थ्य, दम्पति, कम खर्च
सूर्य	पुखराज	100%	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (7000)
09/05/2042	मूंगा	92%	रविवार,गेहुँ, मूंगा, केसर, रक्तचन्दन, घी
08/05/2048	माणिक्य	73%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च
चन्द्र	पुखराज	97%	ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (11000)
08/05/2048	मूंगा	86%	सोमवार,चावल, शंख, कपूर, श्वेतचन्दन, दही
09/05/2058	माणिक्य	67%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय, कम खर्च
मंगल	पुखराज	100%	ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (10000)
09/05/2058	मूंगा	98%	मंगलवार,मल्का, केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन, घी
08/05/2065	माणिक्य	67%	सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
राहु	पुखराज	97%	ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः (18000)
08/05/2065	मूंगा	73%	शनिवार,तिल, सरसों, खड़ग, कम्बल, तेल
09/05/2083	नीलम	70%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
गुरु	पुखराज	100%	ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः वृहस्पतये नमः (19000)
09/05/2083	मूंगा	92%	गुरुवार,दाल चना, हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प, तेल
09/05/2099	माणिक्य	67%	स्वास्थ्य, धन, स्वास्थ्य

नवग्रह रत्न धारण विधि

रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखित तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4-1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में धारण करना चाहिए। स्त्रियों को बाएं एवं पुरुषों को दाएं हाथ में अंगुली धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

रत्न	मंत्र	निषेध रत्न	दान पदार्थ
माणिक्य	ऊँ घृणि सूर्याय नमः	हीरा, नीलम, गोमेद	गेहूँ,चंदन,घी,लाल वस्त्र
मोती	ऊँ सों सोमाय नमः	गोमेद	चावल,चीनी,घी,श्वेत वस्त्र
मूंगा	ऊँ अं अंगारकाय नमः	हीरा, गोमेद, नीलम	गेहूँ,ताम्र,गुड़,लाल वस्त्र
पन्ना	ऊँ बुं बुधाय नमः	---	मूंग,कांसा,हरित वस्त्र
पुखराज	ऊँ वृं वृहस्पतये नमः	हीरा, गोमेद	चने की दाल,गुड़,पीला वस्त्र
हीरा	ऊँ शुं शुक्राय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	चावल,चांदी,श्वेत वस्त्र
नीलम	ऊँ शं शनैश्चराय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	काला तिल,तेल,काला वस्त्र
गोमेद	ऊँ रां राहवे नमः	माणिक्य, मोती, मूंगा	तिल,तेल,कंबल,नीला वस्त्र
लहसुनिया	ऊँ कें केतवे नमः	---	सप्तधान्य,नारियल,धूम्र वस्त्र

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027	03/06/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-03/06/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढेसाती तृतीय ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/07/2093-18/08/2095	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/12/2102-29/11/2105	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सन्तति
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	शत्रु से कष्ट
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	दम्पति
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	बदनामी
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

योग कारक

किसी भी जन्मकुंडली में ग्रह, अपने स्वामित्व तथा स्थिति के अनुसार, सकारात्मक या नकारात्मक फल देते हैं। ये ग्रह विभिन्न दशा काल में भिन्न-भिन्न प्रकार से आचरण करते हैं, जो दशा स्वामी की स्थिति तथा उससे ग्रह के संबंध पर आधारित है। सुविधा के लिए हमने ग्रह के शुभ तत्वों की संगणना प्रतिशत में की है। 50 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ग्रहों को लाभकारक तथा उससे नीचे हानिकारक समझना चाहिए। इस सूचना को आधार बनाकर आप अपनी जन्मकुंडली में दशा के प्रभावों का अध्ययन स्वयं ही कर सकते हैं। इसी तरह इन आंकड़ों द्वारा गोचर के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

योग कारक एवं मारक

लग्न के लिए	:	योग कारक	-	चंद्र, मंगल, सूर्य
		मारक	-	बुध, शुक्र, शनि
जन्मकुंडली के लिए	:	योग कारक	-	गुरु, मंगल, राहु
		मारक	-	केतु, सूर्य, बुध

जन्मकुंडली में ग्रह बल

सूर्य	40%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
चन्द्र	51%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
मंगल	73%	सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
बुध	47%	धन, दुर्घटना से बचाव, धनार्जन
गुरु	75%	स्वास्थ्य, धन, सन्तति सुख
शुक्र	58%	स्वास्थ्य, दम्पति, कम खर्च
शनि	48%	धन, पराक्रम, सुख
राहु	63%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति
केतु	31%	पराक्रम, धन

दशा काल में ग्रह बल

दशा	समाप्ति	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
केतु	09/05/2022	57	44	67	42	56	60	30	37	78
शुक्र	09/05/2042	26	31	71	54	87	91	55	79	46
सूर्य	08/05/2048	82	69	67	42	68	35	30	37	53
चन्द्र	09/05/2058	65	88	55	71	56	47	59	50	35
मंगल	08/05/2065	51	56	99	43	85	64	56	54	46
राहु	09/05/2083	26	45	59	42	72	76	55	94	21
गुरु	09/05/2099	51	56	84	29	100	66	42	66	34
शनि	10/05/2118	26	48	55	86	56	60	86	62	21
बुध	10/05/2135	51	48	67	86	56	60	74	50	34

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्मकाल में मंगल की स्थिति चन्द्रकुंडली में द्वादश भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि चन्द्र से मांगलिक होने का दोष अधिक प्रबल नहीं होता। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृति किंचित व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आप समय समय पर व्यय करते रहेंगे। जिससे आपको अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अल्प रहेगा। तथा सामान्य रूप से धनार्जन होता रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य आपका मध्यम रहेगा। मानसिक परेशानी की अनुभूति आपको समय समय पर होती रहेगी। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी उत्पन्न होंगे लेकिन उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब हो सकता है परन्तु इस कार्य में सफलता आपको अवश्य प्राप्त होगा। साथ ही विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध भी उत्पन्न हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन परस्पर सामंजस्य के कारण अनुकूल रहेगा तथा इसका उचित उपभोग करने में आप समर्थ रहेंगे।

चन्द्रकुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होगी परन्तु प्रचुर मात्रा में धनार्जन होने के कारण इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों तथा समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में भी आप सफल होंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से भाई बहनों का सुख मध्यम रहेगा। पराक्रम तथा आत्मबल में वृद्धि होगी जिससे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। षष्ठ

भावस्थ मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में आपको सफलता मिलेगी। यदा कदा पित या गर्मी द्वारा उत्पन्न रोगों से आपको परेशानी का सामना करना पड़ेगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन परस्पर सामंजस्य के कारण आप सुखी दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे परस्पर मांगलिक दोष का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु सदृश पाप ग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक आप अपने दाम्पत्य जीवन का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्रदान करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

नक्षत्रफल

अश्विनी नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न होने के कारण आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल है। आपकी योनि अश्व, देवगण, नाड़ी आद्य, वर्ग सिंह तथा क्षत्रिय वर्ण है। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपका राशि नाम का प्रथम अक्षर "चो" होगा।

आपका जन्म गंडमूल नक्षत्र में हुआ है। यद्यपि तृतीय चरण के लिए इसका दोष न्यून होता है फिर भी सावधानी वश जन्म समय में ही नक्षत्र की शान्ति कर लेनी चाहिए। इसके लिए आपको इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करवाने होंगे तथा शान्ति के दिन दशांश का हवन कराना होगा इस प्रकार विधिपूर्वक शान्ति करने से गण्डमूल का दोष समाप्त हो जाता है।

मंत्र – ऊँ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्।
वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ऊँ अश्विनी कुमाराभ्याम् नमः।।

अश्विनी नक्षत्र में जन्म लेने के कारण आप श्रृंगार तथा आभूषणों के प्रति विशेष रूचि रखने वाले होंगे। आपके सारे कार्य दक्षता तथा बुद्धिमत्तापूर्ण तरीके से होंगे। आप परम सौभाग्य से युक्त रहेंगे तथा सुन्दर एवं रूपवान भी होंगे जिससे आपका सामाजिक क्षेत्र विस्तृत रहेगा।

प्रियभूषणः सुरूपः सुभगो दक्षोश्विनीषु मतिमांश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न बालक आभूषण प्रिय, रूपवान, भाग्यवान, चतुर तथा बुद्धिमान होता है।

कुछ जानने की जिज्ञासा आपके मन में हमेशा बनी रहेगी तथा व्यवहार में आप विनयशील होंगे । आप सबके साथ नम्रता से पेश आयेंगे। आपकी कीर्ति दूर-दूर तक फैलेगी तथा आजीवन सुख, ऐश्वर्य तथा मान सम्मान का उपभोग करेंगे।

अश्विन्यामति बुद्धिवित्तविनय प्रज्ञा यशस्वी सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् अश्विनी में जन्मा जातक अति बुद्धिमान, धनवान, विनयशील, ज्ञानी, यशस्वी तथा सुखी होता है।

सत्य का अनुसरण करना आप अपना विशिष्ट कर्तव्य समझेंगे। दूसरों की सेवा तथा सहयोग करना भी आपका स्वभाव होगा। समस्त भौतिक सुखों का आजीवन उपभोग करने का योग भी बनता है। आपकी पत्नी सुन्दर, सुशील तथा गुणवान तथा सच्चरित्र होंगी जिससे आपकी कीर्ति का अभिवर्द्धन होता रहेगा। साथ ही सुपुत्रों से भी आप युक्त रहेंगे।

सदैवसेवाभ्युदितौ विनीतः सत्यान्वितः प्राप्तसमस्तसम्पत्।
योषा विभूषात्मजभूरितोषः स्यादश्विनी जन्मनि मानवस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक सेवाभावयुक्त, विनयशील, सत्य का पालन कर्ता सर्वसम्पति को प्राप्त तथा सुशील पत्नी एवं सुपुत्रों से युक्त होता है।

आप अपने कार्यों में व्यस्त रहेंगे जिससे शरीर एवं भोजन के क्रम में व्यवधान उत्पन्न होने से शरीर की स्थूलता बढ़ सकती है।अपने सद्व्यवहार वैभव एवं ऐश्वर्य के कारण आप सर्वसाधारण के सम्माननीय होंगे तथा समाज के सभी वर्गों का सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

सुरूपः सुभगोदक्षः स्थूलकायो महाधनी।
अश्विनी संभवे लोके जायते जन वल्लभः।।
जातक दीपिका

अर्थात अश्विनी में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, भाग्यवान, चतुर, स्थूलकाय, धनवान तथा जनता का प्यारा होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में क्रोध तथा उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नताा पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीड़ित रहेंगे।

मेष राशि में जन्म लेने के कारण आप अल्प मात्रा में भोजन करने वाले होंगे तथा माता पिता की अन्य सन्तानों में अकेले ही श्रेष्ठ हो सकते हैं।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

शरीर का वर्ण आपका ताम्र वर्ण के समान गौरवर्ण होगा तथा नेत्रों में लाली का आभास होगा। सिर में किसी चोट या व्रण का निशान भी होगा।

हाथ, पांव कोमल कान्ति से युक्त होंगे। पानी से आप स्वाभाविक रूप से भय की अनुभूति करेंगे। जीवन की कठिन परिस्थितियों का आप साहस के साथ मुकावला करेंगे क्यों कि आप साहसी प्रकृति के होंगे। सामाजिक सम्मान का आपको अभाव नहीं रहेगा । बुद्धि आपकी चंचल होगी तथा धन को ही मान सम्मान समझेंगे जिससे यदा कदा विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। मित्रों, सहयोगियों तथा पुत्रों की आपके पास बहुलता रहेगी। स्त्री जाति से आपका विशेष आकर्षण रहेगा। परन्तु स्नेहशील प्रवृति के कारण सभी से सहानुभूति एवं सद्व्यवहार रहेगा। इसी कारण सर्वसामान्य का आपके ऊपर विश्वास रहेगा तथा उनसे आपको यथोचित सम्मान की प्राप्ति भी होगी।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञ्चलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरु र्व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

शीघ्र ही नाराज होने के साथ साथ आप शीघ्र प्रसन्न हो जायेंगे ऐसी आपकी प्रवृति की एक विशेषता होगी। घूमना या सुदूर क्षेत्रों का परिभ्रमण आपको रूचिकर लगेगा। आपके हाथ की हथेली में बहादुरी दर्शाने वाले चिन्ह यथा चक्र पताका आदि भी हो सकते हैं। महिला वर्ग में आपको विशेष प्रिय एवं आदरणीय माना जाएगा। आप अपनी विकट परिस्थितियों को छोड़ कर दूसरे की तुरन्त सहायता करने के लिए तैयार रहेंगे। यह भाव आपके अर्न्तमन में सदैव विद्य मान रहेगा।

वृतातामृदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरुः क्रिये।।
बृहज्जातकम्

आपके बुजुर्ग एवं सम्मानीय संबधियों के नाराजी का कारण बनेगी फल स्वरूप आपका आपस में अलगाव हो सकता है अर्थात या तो वे आपसे अलग होंगे या आप उन से। आप सारे कार्य अपनी पत्नी के निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे। साथ ही वैभव का आपके पास अभाव नहीं होगा तथा सामाजिक सम्मान पूर्ण रूप से प्राप्त होता रहेगा।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

घूमने के लिए आप ऐसे स्थानों का चुनाव करेंगे जो अगम्य हो अर्थात् आसानी से जहाँ न जा सकें। सामाजिक संबधों की विस्तृतता के कारण आप अभक्ष्य पदार्थों अर्थात् मांस, मदिरा इत्यादि का भी प्रयोग कर सकते हैं।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

उग्रता का समावेश आपकी प्रवृति में विद्यमान रहेगा इससे क्रोध के रूप में प्रयोग से आप अपने लिए कई अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न कर सकते हैं। साथ ही समयानुसार आप मिथ्या भाषण का भी आश्रय ले सकते हैं।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोडनृतोक्ति व्रणाङ्कताङ्गः क्रियभे प्रजातः।।
फलदीपिका

आपकी रूचि यौगिक क्रियाओं में भी बनी रहेगी तथा सिर में बालों की अल्प संख्या गंजेपन का अहसास कराएगी, पितकारक पदार्थों का अल्पमात्रा में प्रयोग करना श्रेष्ठ रहेगा। अन्यथा मस्तिष्क में किसी भी प्रकार विकार उत्पन्न हो सकता है।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरूषोळयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

देवगण में उत्पन्न होने से आपकी वाणी मधुर एवं श्रेष्ठ होगी। आप हमेशा सत्य बोलेंगे। अन्य लोगों को आपकी वाणी द्वारा कभी भी कोई कष्ट नहीं पहुँचेगा। बुद्धि आपकी सादगी से युक्त होगी अर्थात आप किसी भी बात को सादगी से ग्रहण करने की क्षमता रखेंगे। सात्विक एवं अल्प मात्रा में भोजन करना आपको अच्छा लगेगा। समाज में आप गुणज्ञ अर्थात् गुणों को जानने वाले के रूप में देखे जाएंगे। महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुण आप में पाए जाएंगें। भौतिक सम्पदाओं की आपके पास कमी नहीं रहेगी तथा जीवन सुख एवं चैन से व्यतीत करेंगे।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

देखने में आपका शरीर स्वस्थ और सुन्दर होगा। दान देना आप की प्रवृति होगी तथा जरूरत मन्द लोगों तथा संस्थाओं को आप श्रद्धापूर्वक दान देंगे। आप अत्यन्त सरल हृदय होंगे तथा छल और दिखावटीपन से दूर रहेंगे। भोजन आप थोडी ही मात्रा में लेना पसन्द करेंगे तथा समाज में श्रेष्ठ विद्वानों में आप की गिनती होगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।

जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

अश्वयोनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वतंत्रता प्रिय व्यक्ति होंगे। प्रत्येक कार्य को आप स्वच्छन्दता पूर्वक करना चाहेंगे। बाहरी हस्तक्षेप या सलाह आपको बिलकुल पसन्द नहीं आएगी। अच्छे गुणों से आप सुशोभित रहेंगे। बल तथा साहस की आप में कोई कमी नहीं होगी जो भी कार्य करेंगे अपने साहस और बल पर आश्रित रहकर करेंगे। समाज में आपका अच्छा प्रभुत्व रहेगा। सभी लोग दिल से आपको आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आपके अन्दर वफादारी तथा स्वामिभक्ति के सम्पूर्ण गुण पाए जाएंगे। आप जहाँ भी कार्य करेंगे वहाँ के स्वामी के आप विशेष कृपा पात्र रहेंगे।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म काल में सूर्य तृतीय भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा यदा कदा ही शारीरिक अस्वस्थता रहेगी। साथ ही उनकी आयु भी उत्तम रहेगी। पिता से आप जीवन में समस्त शुभकार्यों में सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम बढाने के लिए वे नित्य यत्नशील रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे तथा अवसरानुकूल आपको उचित उपदेश तथा निर्देश भी देते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति हार्दिक स्नेह एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी कुछ मतभेदों को छोड़कर सामान्य रूप से मधुर ही रहेंगे। उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे उन्हें कोई दुःख या कष्ट न हो। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्यतया शुभ ही समझे जाएंगे।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

आपके लिए कार्तिक मास, प्रतिपदा,षष्ठी, एकादशी, शुक्ल तथा कृष्णपक्ष दोनो की तिथियां, मघा नक्षत्र, बवकरण, रविवार, प्रथम प्रहर तथा मेष राशि में स्थित चन्द्रमा यह समय अनिष्टिकारी हैं। अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य 1,6,11 शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की तिथियों में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार का प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, साझेदारी लेन देन आदि कार्य न करें अशुभ फल होंगे तथा कोई भी कार्य सफल नहीं होगा। इसके अलावा मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, बवकरण प्रथम प्रहर तथा जव चन्द्रमा मेष राशि पर हो तब भी कोई शुभ कार्य न करें। अन्यथा असफलता ही हाथ लगेगी या न्यूनतम लाभ होगा। इसी समय शरीर की भी पूर्ण रूप से सुरक्षा करनी चाहिए।

आप जब समय को प्रतिकूल महसूस कर रहे हों मानसिक अशान्ति, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए। इसके साथ ही सोना, तांबा, गेहूँ, गुड़, घी, लालवस्त्र लाल कनेर का पुष्प, आदि पद्धार्थों का यथा शक्ति योग्य पात्र को दान करना चाहिए। साथ ही मंगल के तात्रीय मंत्र के कम से कम 7 हजार जप करवाकर शान्ति करानी चाहिए। इससे मानसिक उद्विग्नता कम होगी तथा शुभ फलों की प्राप्ति होगी। साथ ही मंगलवार का उपवास भी रखना चाहिए।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ थीं भौमाय नमः।